DOI: https://doi.org/10.46632/cllrm/4/3/2

Contemporaneity of Language and Literature in the Robotized Millennium
Vol: 4(3), 2022
REST Publisher; ISBN: 978-81-936097-3-6
Website: http://restpublisher.com/book-series/cllrm/

डडडजटल युग में हहदी भाषा एवं साडहत्य

राहुल.के.एस
कोडिन डवज्ञान व प्रौद्योडगकी डवश्वडवद्यालय, के रल, भारत
संबंधित लेखक ईमेल: rahulks024@gmail.com

मानव ने डवकास को ऄपनाकर अज डडडजटल युग में पहुुँच गये हैं । डडडजटल युग से मतलब है आंटनेट के माध्यम से सूचना प्रौद्योडगकी का आस्तेमाल करके ईन सारी सूचनाओं को ऄपनाना , डजसमें डवश्व के ककसी भी कोने की सूचना मौजूद हो जाते है । डडडजटल युग ने डवश्व को एक छोटे कमरे में समाडहत ककया है । एक प्रकार से देखे तो मानव की आस सृडि ने ईनको कहीं भी , कभी भी ककसी भी सूचना या घटना को सरल रूप से ऄपनाने में मदद करते हैं ।

डडडजटल युग की एक महत्वपूणण डवशेषता यह है कक आसमें मानव जीवन से संबंडधत सारी चीज़ों का समावेश हो जाते हैं । भाषा एवं साडहत्य भी आससे दूर होकर नहीं रह सकते है । डडडजटल होने से हहदी भाषा का प्रचार प्रसार में भी बढाव अए है । पहले तो डसफ़ण मौडखक रूप का आस्तेमाल करके डहन्दी एवं साडहत्य का डशक्षण होते थे । परंतु कोडवड ने आन सारे गडतडवडधयों को रोककर सबको तबाह कर कदया । यह कहना ठीक नहीं कक कोडवड के पहले डहन्दी भाषा को ओनलाआन रूप से नहीं ऄपना सकता था , परंतु आतना तीव्र रूप से ईस समय आंटनेट में डहन्दी भाषा को ऄपनाना मुडककल था । अज ऐसे कइ ऑनलाआन प्लैटफॉमण का ईदय हुअ है , डजनके माध्यम से हहदी भाषा एवं साडहत्य का डशक्षण सफल रूप से चालू है । डहन्दी साडहत्य के संदभण में कहे तो साडहत्य जगत में प्रकाडशत होनेवाले पुस्तकों को ऑनलाआन में भी डमलना , एक प्रकार से डडडजटल होने का लाभ ही है। ककसी पुस्तक का न डमलने या ईनका प्रकाशन बंद हो जाने पर भी ईस पुस्तक का डडडजटल रूप पाठक को सहायता देते है ।

डडडजटल युग में डहन्दी भाषा को सवणमान्य रूप प्राप्त हुअ हैं । डहन्दी भाषा को पठने के डलए लोग चार दीवारों के सीडमत दायरे से डनकलकर आंटरनेट की माध्यम से ककसी भी समय भाषा को ऄपनाने में सफल हुअ हैं । डडडजटल क्राडन्त का एक महत्वपूणण देन है कक डहन्दी तकनीकी की भाषा भी बन चुकी है , डजसके फलस्वरूप बहुत सारी इ-कॉमसण कम्पडनयां ने डहन्दी भाषा को भी ऄपने व्यापार में शाडमल ककया है । एक प्रकार देखे तो गूडगल एवं गूडगल प्लेस्टोर में ईपलब्ध लगभग सभी एप्लीके शन के भाषओं में अज डहन्दी भी मौजूद है । आसके ऄेलावा एमजोन द्वारा डवकडसत ‘ककनडील’ नामक एक आलक्ट्रोडनक ईपकरण है , डजसमें इ-पुस्तकें ईपलब्द हो जाते है । आस ककडन्डल में भी डहन्दी भाषा एवं साडहत्य सम्बन्धी पुस्तकें मौजूद है । आस प्रकार डहन्दी भाषा को डसफण भारत में ही नहीं , वैडश्वक तौर पर भी लोकडप्रयता डमली है । ऄेंतराणष्ट्रीय तौर पर डहन्दी भाषा एवं भारतीय संस्कृ डत से जुड़े रहने के डलए ऄेडधक से ऄेडधक लोग अ रहे है । डेनमाकण के एक डवश्वडवद्यालय में डहन्दी की प्राध्याडपका रजनी बहल डवदेशी बिों के द्वारा बड़ी संख्या में डहन्दी सीखने के पीछे के तात्पयण को स्पि करती हुइ बताती है “ पहले सीटें भरनी बहुत मुडककल होती थी , लोग डसफण चाआनीज़ व जापानीज़ सीखने अते थे । मगर ऄेब ऄेंतराणष्ट्रीय स्तर पर व्यापार बढ़ जाने से लोग डहन्दी सीखने लगे है । ” 1 बहल बताती है की ईनके पास तीन तरह के डवद्याथी डहन्दी सीखने अते है – एक जो आंडडयन कम्पडनयों के साथ डमलकर व्यापार कर रहे है । दूसरे , जो आंडडयन कु ककग सीख रहे है और आस डसलडसले में ईनका भारत जाना भी होता है । आन दो श्रेणी के लोगों को बस बोलचाल के डलए डहन्दी जानने में रुची है । तीसरे, युवा समुदाय डजसे भारतीय संस्कृडत व दशणन में डजज्ञासा है वह ढंग से डहन्दी पढ़ना - डलखना चाहता है ।

हन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के सम्बन्ध में नइ डशक्षा नीडत 2020 में भी प्रावधान कदए गए है । भारतीय भाषाओं , प्रमुखतः डहन्दी भाषा डशक्षण को डडडजटल माध्यमों के ज़ररए जनता तक पहुुँचाने में वे सफल भी हुए है । वैडश्वक स्तर पर डहन्दी भाषा को प्रमुखता देने में गूडगल जैसे कं पडनयों मौजूद है । आनका मकसद भले ही ईपभोक्तावादी हो , पर ईससे कहीं न कहीं डहन्दी एक वैडश्वक ताकत के तौर पर मज़बूत पा रही है । यहीं नहीं 2016 में हुए ऄेमरीकी राष्ट्रपडत चुनाव में मतदान पची पर पहली बार डहन्दी में मतदाताओं को धन्यवाद का ईल्लेख ककया गया था । ऄेमरीका की चुनाव के आडतहास में पहली बार ऄेन्य भाषाओं के साथ डहन्दी ने ऄेपनी जगह बनाइ । यह एक भाषा के बढ़ते दायरे का प्रतीक है , साथ ही साथ वैडश्वक स्तर पर डहन्दी की स्वीकायणता का भी प्रमाण है ।

अगे हम डडडजटल युग में डहन्दी साडहत्य की ओर देखेंगे तो मालूम होगा कक साडहत्य भी डवस्तार एवं प्रगडत की रास्ते में है । एक ओर डहन्दी साडहत्य में रचनाएुँ डडडजटलीकृत रूप में डनकल रहे है , तो दूसरी ओर ईनके सम्बन्ध में चचाण-पररचचाण , ब्लॉग अकद भी डडडजटल माध्यम द्वारा प्रस्तुत हो रहा है । डडडजटल साडहत्य को हम पररभाडषत करना चाहते हो तो वह ऐसा होगा – डजस साडहत्य ने तकनीकी से जुड़कर ऄेपना डनमाणण ककया , ईसे ऑनलाआन या डडडजटल साडहत्य के नाम से ऄेडभडहत ककया जाता है । आसकेडलए कइ ऄेन्य नाम भी प्रचडलत है, जैसे – आलक्ट्रोडनक साडहत्य या इ-साडहत्य , डडडजटल साडहत्य, साआबर साडहत्य , हाआपर टेक्ट्स्ट साडहत्य , न्यू मीडडया राआटटग अकद । वास्तव में आन्टरनेट पर ईपलब्ध साडहत्य को ही डडडजटल साडहत्य का नाम दे सकते है । आस डडडजटल साडहत्य का प्रयोग दो रूपों में ककया जा सकता है , ऑनलाआन और ऑफलाआन । ऑनलाआन में हम सीधे आन्टरनेट का आस्तेमाल करके ककसी साडहडत्यक रचना को ऄेपना सकते है , तो ऑफलाआन रूप में हम पहले ऑनलाआन से डाउनलोड ककये हुए फ़ाआल को ऄेपना सकते है , डजसमें डाउनलोड करनेके बाद आन्टरनेट की अवकयकता नहीं होते है । ऑनलाआन साडहत्य का स्वरूप ऄेत्यंत डवस्तृत है ; क्ट्योंकक आसमें तकनीकी की सहायता से रूप , रंग

Copyright@ 2022 REST Publisher

,साज-सजावट , शैली अकद पर बदलाव अ जाते है। आन्टरनेट में तो वेबसाइट , ब्लॉग, इ-पडिकाएँ , डवडभन्न सोशल नेट्वर्ककग साआट अकद की माध्यम से डडडजटल साडहत्य ईपलब्ध होते हैं ।

डडडजटल साडहत्य के ऄंतगणत आंटरनेटपर ईपलब्ध साडहत्य को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है :

- मुकित साडहत्य का डडडजटलीकृ त रूप ।
- व्यडक्तगत ब्लॉग , इ- पडिकाएँ , सोशल नेटवर्ककग साइट , वेबसाइट अकद पर ईपलब्ध मौडलक साडहत्य ।

प्रथम श्रेणी में ईन तमाम पुस्तकों का डडडजटलीकृ त रूप अ जाते हैं , जो पहले मुकित होकर प्रकाडशत हो गए है , और बाद में तकनीक के सहायता से डडडजटल बना कदया है । आस डडडजटल रूप को पी.डी.एफ या ऑनलाआन रूप से ऄेपना सकता है । महात्मा गा ँधी ऄंतराणष्ट्रीय डवडश्वद्यालय , वधाण के 'डहन्दी समय.कॉम' , कडवता कोष , भारत कोश , गद्यकोश अकद वेबसाइट के माध्यम से भी डहन्दी साडहत्य जनता तक पहु ँच रहे हैं , डजसके फलस्वरूप देश – डवदेश के पाठक ऄेपने पसंदीदा साडहडत्यक रचना को कहीं भी कभी भी पढ़ सकते है । दूसरे श्रेणी में अनेवाले साडहत्य ऑनलाआन साडहत्य के डवशेषताओं से युक्त होता है । डडडजटल वातावरण में डलखे जाने के कारण ईसमें शब्द, दृकय , एडनमेशन , वीडडयो , ऑडडयो अकद तकनीक का होना स्वाभाडवक है । आसका एक महत्वपूणण डवशेषता यह है की सामान्य रीडत से डभन्न होने के कारण पाठकों को भी ज़्यादा अकर्षषत करते हैं ।

आन्टरनेट में साडहत्य के चचाण करनेवाले वेबसाइटो में साडहडत्यक गडतडवडधयां भी होते रहते है । आसके सन्दभण में सुनीलकु मार लवटे ने डलखा है " डहन्दी साडहत्य से संबंडधत वेबसाआटें के रूप की दृडि से ऄेनेक प्रकार हैं । कु छ पर हर कदन नया साडहत्य प्रकाडशत होता है । कु छ व्यडक्तगत साआटें भी है डजन पर लोग ऄेपना डलखा हुअ साडहत्य प्रकाडशत करते हैं । " 2 ऄेथाणत् सुनीलजी ने यहा ँ दो प्रकार के साआटों से हमें पररडचत कराते है , डजसमें साडहत्य से सम्बडन्धत साआटों के साथ - साथ ब्लॉग के बारें में भी सूचना डमलता है । डडडजटल युग में ब्लॉग का योगदान महत्वपूणण है । ब्लॉग एक प्रकार का वेबसाइट है डजसमें व्यडक्त ऄेपने बातें , डवचार , हचतन अकद को खुले रूप से डलखते है । आन ब्लौगों में डवडभन्न प्रकार के चचाणएँ भी प्रस्तुत होते है , जैसे राजनीडतक , सामाडजक , अर्षथक अकद । यह एक ऐसा मंच है जो लोगों को स्वतन्ि रूप से ऄेपने मन में ईत्पन्न डवचारों के अदान – प्रदान के साथ – साथ चचाण भी प्रस्तुत कर सकते हैं । ब्लॉग के बाद सोशल नेट्वर्ककग साआटों अ जाते है जो प्रत्येक व्यडक्त की डवचारों को प्रस्तुत करने का एक ऄेन्य महत्वपूणण माध्यम है । सोशल नेट्वर्ककग साआटों से मतलब एक ऐसी जगह से है , जहा ँ प्रत्येक व्यडक्त ऄेपने संडक्षप्त पररचय के जररए दूसरों के साथ ऑनलाआन में सम्बन्ध स्थाडपत कर सकता है । ऄेमांडा लेंहटण तथा मेरी मेडेन ने एक लेख में डलखा है " A social networking site is an online place where a user can create a profile and build a personal network that connects him or her to other users." 3 आंटरनेट की दुडनया में फे सबुक , डट्वटर , व्हाट्सएप्प अकद ऄेनेक सोशल नेटवर्ककग साइट और एडप्लके शन ईपलब्ध है , डजनके माध्यम से सामाडजक , राजनीडतक, साडहडत्यक , शैक्षडणक अकद डवडभन्न पहलुओं से संबंडधत सूचनाएं प्रस्तुत हो जाते है । आन साआटों में ऐसे ऄेनेक ग्रुप भी होते है , डजसमें प्रत्येक डवषय संबंधी चचाण-पररचचाण , तकण अकद संपन्न होते है । ऄेथाणत् यह एक माध्यम है जो लोगों को ऄेपने मत को प्रस्तुत करने में जो कु छ भी सीमाएँ है , ईनका दूर करते है ।

अगे हम डहन्दी साडहत्य सफल रूप से ईपलब्ध आन्टरनेट वेबसाइटों का नाम ले तो पहले इ – पुस्तकालय और कडवताकोश का महत्वपूणण स्थान देखने को डमलते है । कडवताकोश में हजारों कडवताएँ , हज़ारों कडवयों का पेज , देश – डवदेशी ऄेनूकदत कडवताओं को एक ही जगह में पठने की सुडवधा डमलाती है । इ-पुस्तकालय एक महत्वपूणण वेबसाइट है , डजसमें मुफ्त रूप में हम पुस्तकों को पढ़ भी सकते है , डाउनलोड भी कर सकते है और चाडहए तो ईनका हप्रट भी ले सकते है । ककसी पुस्तक डमलने में कोइ कदक्कत है तो आस साइट से ईस समस्या का समाधान हो जाते है । डहन्दी भाषा के ऄेलावा मराठी, बंगाली और संस्कृ त भाषा के पुस्तक भी आस साइट में ईपलब्ध है । आसके ऄेलावा साडहत्य हचतन , डज़न्दगी गुलज़ार.कॉम , 44बुक्ट्स.कॉम , डहन्दी प्रडतडलडप ऐसे ऄेनेक वेबसाइट भी मौजूग है जहा ँ डहन्दी भाषा एवं साडहत्य संबंडधत ऄेनेक पुस्तक औंलाआन रूप में ईपलब्ध है । आसमेंडहन्दी प्रडतडलडप एक मशहूर साइट है , जो डसफण प्रकाडशत पुस्तकों को ही नहीं , बडल्क नये लेखकों से भी रचनाएँ अमंडित करते हैं । ऄेथाणत् डजन लोगों को डलखने की रूडच है , ईसको बढ़ाने में आस वेबसाइट सहायता देते है ।

कु ल डमलाकर कहे तो डडडजटल युग में डहन्दी भाषा एवं साडहत्य की लोकडप्रयता एवं प्रचार – प्रसार में बढाव अइ है । तकनीक के डवकास के कारण साडहत्य का डडडजटलीकृ त रूप युवा जनता को ऄेडधक से ऄेडधक लाभ पहु ँचा है । आसी डडडजटल माध्यम से डहन्दी वैडश्वक तौर पर भी महत्वपूणण स्थान रखते है । मुकित एवं मौडखक माध्यम के द्वारा डहन्दी भाषा एवं साडहत्य में जो सीमाएँ ईपलाब्ध थे , डडडजटल रूप ने आस सभी सीमाओं को तोड़ डाला है । ऄेतः कहा जा सकता है कक डडडजटल युग को डहन्दी भाषा एवं साडहत्य ने पूणण रूप में ऄेपना डलया है और आसमें प्रगडत भी कदन ब कदन अ रहेहै ।

Copyright@ REST Publisher